रि - छोड़ भी दे आकाश सिंहासन- ... ॐ श्री मातेश्वरी 1-8-64

ओम शान्ति। बेहद बाप को उनके कर्तव्य सहित अनजाने में भी याद करते हैं। भल जानते नहीं हैं परन्तु उनको याद करते हैं। यह भी बुद्धि में आता है कि वो सुख देने वाला सुखदाता है। कहते हैं आजा ज्योत जगा ना। तो जरूर ज्योत बुझी है, अन्धकार है, तब आकर ज्योत जगाते हैं। तो उनके कर्तव्य पर याद करते हैं ना। जरूर उनका कर्तव्य महान है और हमारे प्रति ही है इसलिये याद करते हैं। भल यथार्थ रीति उनका और उनके कर्तव्य का परिचय न है लेकिन इतना जरूर समझते हैं कि इनसे ऊंच प्राप्ति होती है। उनके साथ हमारा सम्बन्ध है। बाकी यथार्थ रीति पहचान तो वो ही देगा ना। तो उनके कर्तव्य सहित याद भी आती है। उनके द्वारा कुछ होने का है। दुनिया तो गई ... होगा भी यहाँ ही। क्योंकि हम ही चाहते हैं। अभी तो अपन पूरा उनको जानते हैं और प्रैक्टीकल में उनके कर्तव्य का लाभ लेने का पुरुषार्थ रख रहे हैं। वो कर्तव्य अब हो रहा है। प्रैक्टीकल में उनके द्वारा पुरुषार्थ कर प्राप्त कर रहे हैं। समझते हैं करने वाला वो है। ज्ञान का सागर शान्ति का सागर है, कर्तव्य पर ही महिमा होती है। आगे बेसमझी में महिमा गाते थे। अभी समझते हैं वो कर्तव्य प्रैक्टीकल में चल रहा है। बाद उसी कर्तव्य पर उपस्थित हैं हम बाकी ऐसे ही याद नहीं करते हैं। जानते हैं इसी याद द्वारा यथार्थ प्राप्ति होती है। उससे पाने भी सगन्ध रहे हैं। वो पूरा लाभ लेना इसको ही यथार्थ पुरुषार्थ कहा जाता है। यह पुरुषार्थ अलग हो गया और प्रालब्ध भी अलग हो गई। बाकी तो सब प्राप्ति है इस पुरुषार्थ ज्ञान की। जिनको पाते अब जग गये हैं। अपने पुरुषार्थ का अल्प काल के लिये जो मिलता है उसमें भी हम सन्तुष्ट नहीं हैं। अभी तो वो चीज पा रहे हैं जिसमें कोई दुःख की बात न रहेगी। पूरा सन्तुष्ट रहेंगे। इसलिये ऐसे पुरुषार्थ को पूरी रीति रख रखते चलना [illegible] ... भी हर पल का अपना है। इनको काटने लिये पुरुषार्थ भी अपना करना है। आत्मा भी हुआ है जीवात्मा अपना मित्र अपना शत्रु है तो अपने पुरुषार्थ से प्रालब्ध को पाना है। अच्छा। ओम्

(पिता श्री -)

ओम शान्ति। बच्चों ने गीत सुना। याद करते हैं हे P.P.P. निराकार रूप बदल कर साकार में आ जाओ। और क्या रूप बदलेगा। ऐसे तो नहीं कहेंगे बाप, गधे का रूप बन कर आओ। नहीं। यह है पापात्माओं की दुनिया। पुकारते हैं पावन बनने लिये। अगर सब पापी हैं तो फिर किसको पुकारते हैं। अब यह गीत तो रेडियो में भी बजते हैं परन्तु कोई भी समझते नहीं। इसलिये इस दुनिया को जानवरों से भी बदतर कहा जाता है। जानवरों में भी जो बदतर जानवर है उनको कहा जाता है बन्दर। क्योंकि उनमें सब जानवरों से जास्ती विकार होते हैं। बन्दर की ... शकल बनाते हैं हीयर नो ईवल सी नो ईवल ... अब जानवरों को तो नहीं समझाया जाता। समझाना तो मनुष्य को होता है। परन्तु मनुष्य भी इस समय बन्दर से भी बदतर बन पड़े हैं। उनको ही ... कहा जाता है। अब तुम बच्चों को तो अखबार आदि पढ़ना नहीं। भल पढ़े लिखे हैं परन्तु अखबार पढ़ने का शौक नहीं होना है। कोई उनमें भी कोई २ को सर्विस का शौक रहता है। किस ... अखबार में सर्विस का रास्ता निकालें। ब्राह्मण कुल भूषण हैं तो भल पढ़ें परन्तु उनसे भी कोई कोटे में कोई, कोई में भी कोई निकलते हैं जो अखबार में देख और फौरन सर्विस करने ... पड़ते हैं। बाबा ने राईट हैन्ड बनाया है ... को। वो इन बातों से जानते नहीं। लेफ्ट हैन्ड और राईट हैन्ड खड़े होते हैं। कोई किसका यथार्थ रीति भी मत पर अटेंशन देते हैं। यह सब पार्ट है भ्रष्टाचार और श्रेष्ठाचार का। अभी चारों तरफ है कि हे भगवान आओ। आकर श्रेष्ठाचारी बनाओ। ... राज आदि बनाते हैं। ... चारी जरूर है। कहा जाता है यथा राजा रानी तथा प्रजा। यथा राजा माता गवर्मेंट ... माता रहेगा। तो बच्चों को समझाया जाता है भारत सदा श्रेष्ठाचारी था ...

9-8-~~60~~ 64

अगर भ्रष्टाचारी हो तो उनको स्वर्ग ही कैसे कहा जाए। स्वर्ग की स्थापना ज़रूर बाप ही करते होंगे। जिसको ही याद करते हैं। भ्रष्टाचारी ही बुलाते हैं श्रेष्ठाचारी कब बुलाते नहीं। भारत बड़ा श्रेष्ठाचारी था। स्वर्ग था। अभी तो नर्क है। तो नर्क में ज़रूर भ्रष्टाचारी होंगे। कोई कहे भ्रष्टाचारी श्रेष्ठाचार का सबूत दिखाओ। तुम चित्र दिखला सकते हो। बरोबर सतयुग में यथा राजा रानी तथा प्रजा थे। देखो। श्रेष्ठाचारी थे ना। नाम ही है स्वर्ग। द्वापर में भी जैसे श्रेष्ठाचारी राजा रानियों के मन्दिर बनाए पूजा करते हैं तो ज़रूर खुद भ्रष्टाचारी हैं। अपन को कहते भी हैं हम भ्रष्टाचारी हैं। [illegible] पापी हैं। आप सर्व गुण सम्पन्न ... हैं। भ्रष्टाचारी श्रेष्ठाचारियों की महिमा करते हैं भारत में। भ्रष्टाचारी राजाओं सब के पास श्रेष्ठाचारी देवताओं के मन्दिर हैं। महिमा गाते रहते हैं। निमन्त्रण बनाए पूजा करते हैं। बाप समझाते हैं सन्यासी भी कुछ न कुछ श्रेष्ठाचारी हैं जो भ्रष्टाचारी उनको अपना गुरु बनाते हैं श्रेष्ठाचारी बनने के लिये। परन्तु जब तक खुद भी सन्यास न करें तब तक बन नहीं सकते। बाबा ने समझाया है धर्म स्थापन करने अर्थ ऊपर से जो आत्मायें आती हैं वो ज़रूर सतो प्रधान श्रेष्ठाचारी होंगी। भल माया का राज्य है परन्तु पहले आने वाले ज़रूर सतो प्रधान होंगे। तब तो उनकी महिमा होती है। फिर सतो रजो तमो में आते हैं। देवतायें भी श्रेष्ठाचारी थे। अभी भ्रष्टाचारी हो गए हैं। हर एक को सतो रजो तमो में आना ही है। भ्रष्टाचारी बनना ही है। बाप बैठ समझाते हैं कैसे भ्रष्टाचारी बनते हैं। सन्यासी भी पहले श्रेष्ठाचारी थे फिर भ्रष्टाचारी बनते हैं। तो पहले वो श्रेष्ठाचारी होने कारण उन्हों का नाम होजाता है। यह बातें कोई नहीं जानते हैं। अखबार में पड़ता है कि सन्यासी हैं जो भ्रष्टाचार को बन्द करने का पुरुषार्थ करते हैं। अब श्रेष्ठाचारी आवें कहां से जो भ्रष्टाचार को बन्द करें। द्वापर से लेकर राजायें लोग श्रेष्ठाचारी देवताओं के मन्दिर बनाए पूजा करते आए हैं। वो खुद ही अपना भ्रष्टाचारीपना दिखाते हैं। जो श्रेष्ठाचारी राजा रानी थे उन्हों को फिर सतो तमो में आना ही है। भ्रष्टाचारी बनना ही है ज़रूर। आपेही पूज्य श्रेष्ठाचारी फिर आपेही पुजारी भ्रष्टाचारी बनते हैं। फिर पूज्य देवी देवताओं की बैठ पूजा करते हैं। अभी तुम यह लिख सकते हो कि यथा राजा रानी तथा प्रजा सतयुग में श्रेष्ठाचारी थे। वाईसलेस थे। बाद में फिर कलायें कम कम होती हैं। भारत को नीचे आना ही है। यह खेल ही भारत पर है। आधा कल्प भारत सदा श्रेष्ठाचारी था। सदा एक रस भी नहीं रहते। 16 कला से 14 कला में तो आना ही है। भ्रष्टाचारी बनते हैं तो और ही कलायें कम होती जाती हैं। तमो प्रधान बन पड़ते हैं। भ्रष्टाचार भी सतो प्रधान सतो रजो तमो प्रधान होता है। जैसे माया भी पहले सतो प्रधान फिर सतो रजो तमो प्रधान होते हैं। अभी तमो प्रधान है। भेंट करनी पड़ती है। बाप समझाते हैं यथा राजा रानी तथा प्रजा सभी भ्रष्टाचारी हैं। अब संगठन बनाते हैं कि हम श्रेष्ठाचारी बनावें। परन्तु यह तो है ही भ्रष्टाचारियों की सृष्टि। तो श्रेष्ठाचारी कहां से आवें। सतयुग में जो श्रेष्ठाचारी थे, कलियुग में उन्हों को भी भ्रष्टाचारी बना दिया है। पहले भ्रष्टाचार बनाया है P.P.P [illegible] ने। पत्थर [illegible] में [illegible] दिया है। [illegible] आपे समझते हैं कहां रहते [illegible] P है। तो यह कितना भ्रष्टाचार हुआ। [illegible] करते हैं। आप यह कहते हैं सब में आत्मा [illegible] भ्रष्टाचारी बनाया है। 84 लाख यूनियें बताते हो। [illegible] को [illegible] में डाल दिया है। जैसा ठाकुर वैसे सृष्टि। सतयुग को भी ऐसा समझते हैं। गिलानी करके [illegible] अपना बना पड़ते हैं। अच्छा फिर आओ B.V.S पर। ब्रह्मा के लिये कहते सरस्वती पर फिदा [illegible] शंकर पार्वती पर फिदा हुआ। विष्णु की ही रूप समझो K उन्हों की भी गिलानी करते हैं। K को [illegible] भ्रष्टाचारी बनाए दिया है। कहते उनको 16108 रानियां थी। भगाते थे। सब [illegible] दी है। अगर भी K ऐसा भ्रष्टाचारी था तो फिर तुम भी K भगवान [illegible]

9-8-64

3

कैसे कहते हो! वो तो पतितों को पावन बनायेंगे। जब कि उनको सब से जास्ती पतित दिखाते हैं। शास्त्र बनाने वाले कितने भ्रष्टाचारी ठहरे। शिव को, B.V.S को राम K को सब को गिलानी लिखदी है। फिर राम के लिये कहते राम की स्त्री चुराई गई.... वहां भी भ्रष्टाचार दिखा दिया है। बाप कहते है बाप भी भ्रष्टाचारी मुझे को ही सर्वव्यापी कह दिया? तब स्वर्ग कहां होता है! कुछ भी समझते नहीं। बिल्कुल ही चट खाते में है। तो समझाना चाहिये ना। बाबा भारत वासियों को समझाते हैं कि यह सब के लिये नालेज है। यथा गवर्मेन्ट भ्रष्टाचारी तथा सब। खुद ही कहते हैं सभी भ्रष्टाचारी कर रहे हैं। अभी ~~श्री~~ श्रेष्टाचार किसको कहें। साधू सन्यासी भी पहले अच्छे थे जो कहते थे ईश्वर और उनकी रचना बेअन्त है। अभी तो कह देते शिवोहम। सभी ईश्वर ही ईश्वर हैं। इस लिये बाप कहते हैं जब-२ अति भ्रष्टाचार होता है तब मैं आता हूं। पतितों को अर्थात् भ्रष्टाचारियों को पावन को श्रेष्टाचारी बनाऊंगा। यह तो बिल्कुल समझ की बात है। माया ने सबको बेसमझ बना दिया है। श्री मत भगवत गाया जाता है। श्री मत क्या करती थी। वो तो श्रेष्ट सब को राजा बनाते थे। कहते थे इस मत पर चलते रहने तो तुम प्रिन्स प्रिन्सेज़ बनोगे। श्री K इतना मशहूर पुरुषोत्तम उनको फिर 16108 रानियां होंगी। ~~क~~ कितनी भारत की निन्दा करते हैं! कुछ बुद्धि से समझना भी तो चाहिये। श्री K प्रिन्स, जो फिर राजा बनता है। उनको इतनी 16108 रानियां तो प्रजा को कितनी होंगी। बाप आ रि बैठ समझाते हैं, इसमें डरने की कोई बात नहीं। यह तो सच्ची बात है। जैसा राजा रानी वैसी प्रजा होती है। राजा पूज्य तो प्रजा भी पूज्य थी। तो यह गेट देनी है। क्राइस्ट से 3000 बरस पहले भारत 16 कला सम्पूर्ण श्रेष्टाचारी था। भारत सोने की चिड़िया थी। यथा राजा रानी तथा प्रजा स्वर्ग में सदा सुखी थी। फिर जब से सबका राज्य शुरू हुआ है तो भ्रष्टाचारी बनने लगे हैं। देखो देखादेखी भी हरेक प्रधान बन पड़ते। वैसे तो सन्यासियों आदि भी तमो प्रधान तो बनेंगे ना। अभी तो देखो माताओं के गुरु बन बैठे हैं। माताएं उन्हों के पैर धोए कर पीतीं हैं। तो दिल अन्दर गुस्सा आना चाहिये स्त्री को सुहाग के बदली दुहाग दे देते। यह तो महा पाप है। भ्रष्टाचारी कहेंगे ना। अच्छे-२ राजाएं घरबार छोड़ जाते हैं फिर रानियां क्या करेंगी। बहुत गन्द हो जाता है। पटियाला के राजा को 6- रानियां थीं। फिर राजा ने सब को निकाल दिया, रानियां कहां जाय। ज्ञान तो है नहीं। तो ज़रूर गन्दी होंगी। तो यह भ्रष्टाचार कहेंगे ना। गवर्मेन्ट भी जानती है हमारे आफीसरस भ्रष्टाचारी हैं। बहुत रिश्वत लेते हैं। डिक्लेरेशन करते हैं। नेहरू की कितनी ग्लानी कर दी है। भारत 100% श्रेष्टाचारी था अभी वो ही भारत जड़जड़ीभूत तमो प्रधान होने कारण 100% भ्रष्टाचारी है। इसमें सब आ जाते हैं। इस रीत अखबार में कोई डाले गवर्मेन्ट कुछ कर नहीं सकती। खुद ही कहते हैं भ्रष्टाचार है, हमारे आफीसरस में भी भ्रष्टाचार है। राजा रानी तो है नहीं जो कहें प्रजा में है। यहां तो है ही प्रजा का प्रजा पर राज्य। नम्बर वन से लेकर सब भ्रष्टाचारी हैं। पहले तो श्रेष्टाचारी ~~बन रहे हो बना सकते हैं~~ गवर्मेन्ट बननी चाहिये। उनको कौन बनावे। अब तुम गरीब आजाद बच्चों ही नम्बर वन श्रेष्टाचारी बन रहे हो। बाप कहते हैं, इन साधुओं आदि सबको श्रेष्टाचारी आइ बनाता हूं। अब तुम B.K सिद्ध कर बतलाते हो सब से जास्ती भ्रष्टाचारी कौन है। शास्त्रों में कितनी ग्लानी बैठ लिखी है। ऐसे नहीं कि द्वापर से ही शास्त्र शुरू होते हैं। नहीं। बाद में बनते हैं। पहले तो चित्र बनते फिर इनकी जीवन कहानी बनाते हैं। पहले चित्र बनावे तब फिर शास्त्र बनावे। ड्रामा ऐसा है। दो पांच सौ बरस बाद में बैठ शास्त्र बनाते है। ड्रामा अनुसार फिर भी ऐसे ही बनेंगे। कारण तो चाहिये ना कि भारत क्यों गिरा [illegible] सही है। ऐसे नहीं कि व्यास भगवान ने शास्त्र बैठ लिखे। यह तो बनते ही [illegible]

लिखते हैं। बाहर की कहानी बैठ लिखते हैं तो कोई एक्युरेट थोड़ेही हो सकती। बाबा ने अभी ज्ञान दिया, अभी पार्ट चला सो 2500 बरस बाद क्या लिख सकेंगे। 3000 वर्ष बाद बैठ [illegible] लिखेंगे उनके कम्पेनियन। तो जैसे नाटक बैठ बनाते हैं वैसे कोई ने बैठ लिखा। लड़ाई लगी है [illegible]। ज्ञान अनुसार से बना हुआ है। फिर भी बहुत झूठी गीता। झूठे चित्र निकलेंगे। अब बंगाल में काली का मंदिर है काली मां। कहते प्राण लेते हैं बलि देते। काली आई कहां से ला [illegible] देवी, [illegible] तो देखने कैसा है। जो अशुद्ध [illegible] बनाते हैं वह तो प्रजा के सवाल बनेंगे। [illegible] बहुत शरीरों [illegible] आदि करते हैं तो वो [illegible] बनाने के सवाल करते हैं। फिर भी पिछाड़ी में उनको [illegible] बिल्कुल मिल जाते हैं। कहते यह [illegible] हैं [illegible] देवी की पूजा होती है। बोले बहुत [illegible] हैं परन्तु कोई धारण नहीं करे। जैसे कोई [illegible] का [illegible] हैं जिन में लाख [illegible] बनाते हैं कोई [illegible] तो [illegible] बाबा को [illegible] अनुभव है। अब से [illegible] है [illegible] बाबा में तो बहुत [illegible]। [illegible] को [illegible] 5 मिनट का [illegible] बनाए कोई [illegible] में [illegible]। [illegible] तो [illegible] करें। फिर बहुत मजा [illegible]। अब बाद आकर [illegible] में [illegible] बनते हैं। इनके बड़ा [illegible] फिरना चाहिए। [illegible] के [illegible] फिर [illegible] होना। यहां तो कोई [illegible] आदि नहीं मिलेगा। बाबा ऐसी [illegible] हो [illegible] सके। यह तो सच्ची बात है ना। बाबा भी [illegible] बातें की बुद्धि है ना। तो यह बनाना चाहिए [illegible] किसने बनाया। शास्त्र [illegible] खण्डन किया और [illegible] खण्डन नहीं हो सकते। [illegible] किसने [illegible] किया [illegible] नहीं [illegible] की चलन ऐसी होनी चाहिए जैसे देवताएं चलते हैं। मुख से बात ऐसी करनी चाहिए जो रतन निकलते रहें। तो पत्थर। तो सब पत्थर मारेंगे। तुम पत्थर न मारो। नाम बदनाम न करो। आपस में बहुत [illegible] पानी हो पड़ते हैं, बाबा कहते हैं ऐसे [illegible] भ्रष्ट हो पड़ेंगे। चण्डाल का जन्म जाकर पावेंगे। अच्छा मात पिता बापदादा का सिकीलधे बच्चों प्रति याद प्यार गुड मॉर्निंग। ओम्

7-8-64- रात्री क्लास -- अमृतसर [illegible] गांव है। क्योंकि प्रवृत्ति मार्ग मार्ग दूसरे नम्बर में गुरु नानक का चला है। पंजाब में महा राजा महा रानी भी हुए हैं। अकाल [illegible] कहते हैं, जिनको काल नहीं खा सकते। काल तो आत्माओं को भी नहीं खा सकते। अमृतसर में अकाल तख्त [illegible] भी बनते हैं। कहते हैं अकाल मूर्त। उनका अकाल तख्त। अब अकाल तख्त तो वास्तव में सोमनाथ मंदिर भी रहा। एक अकाल तख्त है सोमनाथ का मंदिर। एक अकाल तख्त हुआ शिव का मन्दिर। वास्तव में अकाल तख्त तो यह है चैतन्य में। बाबा कहते हैं मैं इस चैतन्य में आता हूँ। फिर बाद में यादगार [illegible] तख्त मन्दिर बनाते हैं। उनको तो पता नहीं है और कौन भी परम पिता किस तख्त पर वा किस रथ पर आते हैं। बाबा कहते हैं चैतन्य में तो यहां ही हूँ। बाकी भक्ति मार्ग में मन्दिर बनाते हैं। फिर भी नाम अकाल तख्त अमृतसर में है। इन्हों की राजाई भी हुई है। और कोई धर्म नहीं जिसने राजाई स्थापन की हो। सिक्ख धर्म में ही महा राजा महा रानी हुई हैं। अमृतसर बहुत अच्छा गांव है। वहां से [illegible] भी निकली हैं। पहलवान सिपाही भी अमृतसर में आए हैं। अच्छा।

ओम्